अमर्त्य सेन को जर्मन बुक ट्रेड के शांति पुरस्कार के अवसर पर जर्मन राष्ट्रपति फ्रान्क--वाल्टर स्टाइनमायर द्वारा,
18 अक्टूबर, 2020 को फ्रैंकफर्ट आम माइन में दिया गया भाषन

राष्ट्रपति के भाषण को पाउल्सकिर्खे में अभिनेता बुर्गर्ट क्लाउस्नर द्वारा पढ़ा गया था

पुस्तक मेले के हॉल सूनसान हैं, पाउल्सकिर्खे लगभग निर्जन हैं, एक दूसरे महाद्वीप पर शांति पुरस्कार विजेता हैं - ये वास्तव में असामान्य समय हैं। समय जो दिल को भारी बना रहा हे ।

इन समयों में कोई साधारणा नहीं है। और फिर भी यह अच्छा है कि हम इस पुरस्कार समारोह में शामिल हो रहे हैं। आज हम एक ऐसे व्यक्ति का सम्मान कर रहे हैं जो वैश्विक न्याय के विचार के साथ जुड़ा हुआ है। न्याय और स्वतंत्रता की खोज को विराम नहीं लेना चाहिए, खासकर कोरोना महामारी के दबाव में।

आज के पुरस्कारदाता की तुलना में, एक बेहतर अभियान नेता कौन हो सकता हे? अमर्त्य सेन के साथ हम एक विश्व नागरिक, एक महान सार्वजनिक बौद्धिक, एक नैतिक अधिकारी का सम्मान करते हैं।

प्रिय अमर्त्य सेन: आपके लिए अभी असामान्य रूप से बोस्टन मे जल्दी सुबह है, इसके बावजूद भी या ठीक इसके कारण, आपको बोस्टन मे एक विशेष

रूप से नमस्ते व शुभ प्रभात!

हम फ्रैंकफर्ट में व्यक्तिगत रूप से आपका स्वागत करना चाहते थे। मगर कोरोना महामारी असंभव बना बना रही है। और इसलिए आप आज हमसे बहुत दूर हैं और फिर भी इतने करीब हैं। दूर, क्योंकि 6000 किलोमीटर और छह समय क्षेत्र हमें

ADDRESS Bundespräsidialamt
11010 Berlin
TEL +49 30 2000-2021
FAX +49 30 1810200-2870
E-MAIL presse@bpra.bund.de
WEBSITE www.bundespraesident.de

अलग करते हैं। और करीब, क्योंकि आपके विचार और विजन किसी भी दूरी को पार करते हैं - महाद्वीपों, संस्कृतियों और जीवन के विचारों के बीच –।

डिजिटल दुनिया कभी भी व्यक्तिगत संपर्क की जगह नहीं ले सकती। लेकिन शायद ही कभी मैं वीडियो टेलिफोनी के आविष्कार के बारे में इतना खुश हुआ हूं जितना मैं आज । हम आपके पुरस्कार भाषण के लिए तत्पर हैं!

अमर्त्य सेन ने खुद के बारे में कहा कि वह "एक विश्वविद्यालय परिसर में पैदा हुए थे और लगता है कि वे जीवन भर किसी न किसी परिसर में रहते हैं"; कैम्ब्रिज, दिल्ली, हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड, येल। उन्होंने कलकत्ता में अपनी पहली प्रोफेसरशिप प्राप्त की जब वह केवल 22 वर्ष के थे। आक्रोशित छात्रों ने फैकल्टी की दीवारों पर पालने के साथ भित्तिचित्रों की धुनाई की ...

अमर्त्य सेन पूरी तरह से एक अकादमिक है, लेकिन उनका काम सिर्फ अकादमिक नहीं है - एक हाथी दांत टॉवर से, दूसरी हाथीदांत टॉवर तक - कम से कम इस सैद्धांतिक अर्थ में नहीं है। सेन चाहते हैं कि सभी लोग उन्हे समझे । सिर्फ एक वैज्ञानिक के रूप में, दुनिया को वह नहीं समझाना चाहते थे । वह दुनिया को बदलना चाहते थे । अमर्त्य सेन ने दुनिया को बदल दिया है ।

उनका काम छह दशकों तक फैला है और आर्थिक सिद्धांत से लेकर नैतिक सिद्धांत तक है। उनकी किताबें बेस्टसेलर हैं। अमर्त्य सेन के पास सौ से

अधिक मानद डॉक्टरेट हैं, और 1998 में उन्हें अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार मिला।

तो अब जर्मन बुक ट्रेड का शांति पुरस्कार । कुछ औब्जरवरों ने पूछा: क्या नोबेल पुरस्कार विजेता को फिर भी इस पुरस्कार की आवश्यकता है? मैं कार्लो श्मिड से सहमत हूं: अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार अर्थशास्त्र में विशेषज्ञ ताज हो सकता है, शांति पुरस्कार "मानवता का नागरिक ताज" है।

आज हम इस नागरिक का ताज एक दार्शनिक को सौंप रहे हैं, जो खुद दार्शनिक-राजा नहीं बनना चाहता। इसके बजाय, सेन सत्ता में उन लोगों को "वास्तविक और गहन दार्शनिकों" में बदलना चाहते हैं; स्वतंत्रता के प्रबुद्ध राजनेताओं के लिए। भूख, हिंसा, उत्पीड़न से मुक्ति। शिक्षा, ज्ञान, व्यक्तिगत विकास की स्वतंत्रता।

अमर्त्य सेन इस दुनिया की विषमताओं और अन्याय के खिलाफ लिखते हैं। उनका मानव विकास सूचकांक (HDI) न केवल सकल घरेलू उत्पाद (GDP) को देखता है, बल्कि लोगों की भलाई को भी देखता है। क्योंकि एक समाज, सेन का कहना है, "आर्थिक रूप से अत्यधिक कुशल हो सकता है, लेकिन पूरी तरह से डिसगस्टिंग है।"

तो किसने इस पुरस्कार के लिए किसी से अधिक की कामना की होगी, जिसका काम अपनी बौद्धिक प्रतिभा के बावजूद, सब से ऊपर एक चीज को अलग करता है: मानवता। इसलिए शांति पुरस्कार अमर्त्य सेन का सम्मान करता है और अमर्त्य सेन शांति पुरस्कार का सम्मान करता है। और हम यहां पाउल्सकिर्खे में और आप घर पर टीवी के सामने इस पल को एक साथ मनाने के लिए उत्सुक हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक स्व-निर्धारित जीवन का अधिकार है, भले ही उनकी उत्पत्ति, त्वचा का रंग, उनके लिंग या यौन अभिविन्यास क्या है,

हरेक को शिक्षा का अधिकार हे, हरेक को आत्म-पूर्ति का अधिकार हे । अंतिम, लेकिन कम से कम, राज्य और इसके संस्थानों की जिम्मेदारी है कि ये, इन  अधिकारो को जनता के लिये संभव करें : इन पर अमर्त्य सेन का अडिग विश्वास हैं । ये एक डेमोक्रेट की मुख्य मान्यताएं हैं जो मेरे दिल से बोली जाती हैं।

अमर्त्य सेन ने छात्रों, अकादमिक सहयोगियों की पीढ़ियों को प्रभावित किया है, हाँ: इसके पाठक पूरी दुनिया में। उनके लेखनों ने अर्थशास्त्र के बारे में मेरा दृष्टिकोण भी व्यापक किया। हम एक समाज के धन को कैसे मापते हैं? अच्छे आर्थिक विकास का गठन क्या है? हम अधिक वैश्विक न्याय कैसे प्राप्त करेंगे?

यदि हम अपने स्वयं के कार्यों की गंभीर रूप से जांच नहीं करते हैं, तो अधिक वैश्विक न्याय के लिए अपील फीकी पड़ जाएगी। जर्मनी को श्रम के अंतर्राष्ट्रीय विभाजन से काफी लाभ होता है। हमारी कंपनियों की वैल्यू चेन ग्लोब है, हमारे समूह दुनिया के सभी हिस्सों में उत्पादन करते हैं। हमारी समृद्धि मुक्त विश्व व्यापार पर निर्भर करती है। हम निष्पक्ष विश्व व्यापार के लिए जिम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा वहन करते हैं।

लेकिन हमारी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है: उत्तर और दक्षिण के बीच वैश्विक न्याय तभी सफल हो सकता है जब हम असंतुलन, सत्ता की विषमता और परस्पर निर्भरता के बारे में जागरूक हों। और, अगर हम उसके अनुसार

कार्य करते हैं। या अमर्त्य सेन के शब्दों में: वैश्विक न्याय तभी सफल हो सकता है जब हम "दुनिया को साझा करें"।

अभी भी दुनिया भर में सत्तर मिलियन से अधिक बच्चे हैं जिन्हें काम करना पड़ता है, ताकि वे भूखे न रहें । उनका उपयोग खदानों में किया जाता है, वे

कपास के खेतों और केले के बागानों में काम करते हैं। वास्तव में, इन्हें स्कूल डेस्क पर बैठना चाहिए ।

हमारी दुकानों में कपड़े ढाका की उस कपड़ा फैक्ट्री से भी आए, जहाँ हजारों लोग एक सीमित स्थान पर सिलाई मशीनों में बैठे थे। आग लग गई। हमें याद है: कारखाने में आपातकालीन निकास नहीं था। खैर आग की लपटों में सौ से अधिक महिलाओं की मौत हो गई।

ढाका एक अकेली घटना नहीं है। ढाका दक्षिण एशिया और अफ्रीका के हजारों कपड़ा कारखानों में अक्सर अमानवीय कामकाजी परिस्थितियों के लिए खड़ा है। ढाका उत्तर की मेट्रोपोलिज़ में फेंकने वाली मानसिकता और लापरवाही का प्रतीक है, जिससे दक्षिण के महानगरों में लोग अक्सर पीड़ित होते हैं।

एक नेटवर्कयुक्त दुनिया में जिसमें हम उत्पादकों और उपभोक्ताओं के रूप में, ग्राहक और खरीदार निकट रूप से जुड़े हुए हैं, इस दुनिया में हमें उनके लिए वैश्वीकरण नियमों की आवश्यकता है । ये भगवान द्वारा नहीं दिए गए हैं, वे मानव निर्मित हैं। अगर हमें पता चलता है कि ये नियम अनुचित हैं, तो क्या हमें नियमों में बदलाव नहीं करना है ?

कुछ फीचर पेजेस में इस साल के शांति पुरस्कार विजेता के बारे में कहा गया था: वैश्विक न्याय, स्वतंत्रता - यह सब सही और निष्पक्ष है। लेकिन “ब्लैक लाइव्स मैटर” आंदोलन या जलवायु विरोध के साथ इन परेशान समय में, अधिक दबाव वाले मुद्दे नहीं हैं?

मुझे लगता है कि यह गलतफहमी है। क्योंकि अमर्त्य सेन का संबंध मौलिक और विशेष रूप से अत्यावश्यक है। जब सेन सामाजिक और पारिस्थितिक न्याय के बारे में बात करते हैं, तो वे हमेशा एक चीज से संबंधित होते हैं:

लोकतंत्र। सेन के लिए, लोकतंत्र, न्याय के लिए महत्वपूर्ण शर्त है। और लोकतंत्र के लिए न्याय एक मूलभूत आवश्यकता है।

भेदभाव के खिलाफ या जीवन-संकट वाले जलवायु संकट के खिलाफ लड़ाई - ये न्याय के ज्वलंत प्रश्न हैं, जिनका हमारे लोकतंत्रों को जवाब खोजना होगा। हां, न्याय के ये बुनियादी सवाल नहीं हैं कि किस लोकतंत्र में विशेष रूप से एक जवाब खोजना होगा? और सरकार के अन्य रूप क्या बदलती परिस्थितियों में बार-बार न्याय प्राप्त कर सकते हैं और सभी के लिए बातचीत कर सकते हैं?

सेन लोकतंत्र की कमजोरियों के बारे में जानते हैं। "लोकतंत्र", वह कहते हैं, "अन्याय के लिए एक स्वचालित मारक नहीं है"। "लोकतंत्र लोगों को सशक्त बनाने का एक तरीका है" न्याय के लिए खड़ा होना। उनके शब्दों में: "लोकतंत्र किसी भी चीज़ का स्वचालित उपाय नहीं है। यह मलेरिया को मारने के लिए कुनैन की तरह नहीं है। लोकतंत्र सक्षम करने का एक तरीका है। ”

जलवायु विरोध पर लाखों युवा, जिस विशाल शक्ति के साथ उन्होंने राजनीति के केंद्र में पारिस्थितिक प्रश्न रखा, यह दर्शाता है कि लोकतंत्र लोगों को उनके विश्वास के लिए खड़े होने और राजनीति को चलाने में कितना सक्षम बनाता है।

आलोचना, विरोध, - संस्थागत प्रक्रियाओं से परे हैं - लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा। वे सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देते हैं। आप प्रारंभिक अल्पसंख्यक राय को मुख्यधारा बना सकते हैं। लेकिन विरोध निर्णय लेने वाली संस्थाओं के भीतर लोकतांत्रिक प्रमुखताओं को प्रतिस्थापित नहीं करता है। हित के टकरावों का सामना करना कठिन और अक्सर थकाऊ रहता है। अक्सर पर्याप्त, परिणाम एक समझौता बने रहते हैं और हमेशा संतोषजनक नहीं होते हैं। हां: लोकतंत्र मैं कमजोरियां भी हैं। और लोकतंत्र  कभी भी परफेक्ट नहीं होगा । यह इसमें रहने वाले लोगों से ज्यादा परफेक्ट नहीं है।

यहीं हमारे लोकतंत्र के लिए चुनौती है: राजनीतिक प्रणालियों के बीच प्रतिस्पर्धा में, इसे बार-बार दिखाना पड़ता है कि क्या हमारे समय के बड़े सवालों के बेहतर जवाब हैं। कि वह भेदभाव खत्म करने में बेहतर है। यह दोनों पारिस्थितिक परिवर्तन करने में बेहतर है: ग्रह के लिए सही है और सामाजिक न्याय बनाए रखती हे।

लोकतंत्र हमें गलत फैसलों से नहीं बचाता है। लेकिन यह हमें यह हमें गलती यौ को करेक्ट करने का मौका देता है । सरकार के किसी अन्य रूप में खुद को सही

करने की अंतर्निहित क्षमता नहीं है। और यह स्वतंत्र, निष्पक्ष, समान चुनावों में झूठ को सही करने की क्षमता है।

यह हमारे ऊपर है कि क्या लोकतंत्र खुद को सिस्टम के बीच प्रतिस्पर्धा में शामिल करता है। आइए इस जिम्मेदारी का सामना करें!

फर्डिनेंड।, पवित्र रोमन सम्राट का आदर्श वाक्य था: " फीआट युस्टीसिया ऐट पैरेयाट मुन्डोस "। किसी भी कीमत पर न्याय, भले ही दुनिया प्रक्रिया में समाप्त हो जाए?

अमर्त्य सेन न्याय के पक्षधर हैं। उसका उद्देश्य पूरी तरह से दुनिया के लिए लड़ना नहीं है, भले ही इस पर सहमति हो कि यह कैसा दिखना चाहिए।

अमर्त्य सेन जॉन रावल के न्याय की फिलोसफी को, उनकी सैद्धांतिक प्रतिभा के लिए स्वीकार करते हैं। "अज्ञानता के घूंघट" के पीछे सिर्फ एक दुनिया बनाना, भले ही किसी की भी स्थिति कैसी भी क्यों न हो, आकर्षक होती है। हालाँकि, सेन इसे व्यावहारिक या यथार्थवादी नहीं मानते हैं। वह यहां और अब में ठोस और स्पष्ट अन्याय को खत्म करना चाहते है।

सेन बिना किसी विचारधारा के, चाहे अधिक राज्य हो या अधिक बाजार, इसके लिए सबसे उपयुक्त है। उसके लिए यह परिणाम पर निर्भर करता है, वह जानना चाहते है: राज्य लोगों को एक स्व-निर्धारित जीवन जीने में सक्षम कहां

करता है? व्यक्तिगत जिम्मेदारी से न्याय और स्वतंत्रता कहां खिलती है? और जहां एक ही राज्य की सीमाओं से परे एकजुटता की आवश्यकता है?

ये ऐसे प्रश्न हैं जो कभी अमूर्त नहीं होते हैं और जो हमारे समय के महान संकटों में संक्षिप्तता को दबाते हैं। हम जानते हैं: संकट कभी भी महान समतुल्य नहीं होते हैं जिन्हें वे अक्सर वर्णित करते हैं। संकटों को गहरा करता है। कोरोना महामारी सभी लोगों और देशों को प्रभावित करती है, लेकिन यह सभी को समान रूप से प्रभावित नहीं करती है। जहां भी स्वास्थ्य देखभाल में संरचनाओं की कमी है, जहां भोजन की स्थिति खराब है, जहां बड़ी गरीबी है, वहां वायरस बहुत जोर से हमला करता है।

कोरोना महामारी एक एसिड परीक्षण है, अंतरराष्ट्रीय एकजुटता और अनुसंधान और राजनीति, के क्षेत्र में दुनिया भर में सहयोग । वैक्सीन के उचित वैश्विक वितरण के सवाल के मुकाबले यह कहीं अधिक क्रिस्टलीकृत है। एक वैश्विक

वितरण दोनों ही है: अच्छी तरह से समझा जाने वाला स्वार्थ और एक स्पष्ट अनिवार्यता (**Categorical imperative**)। हमें यह सुनिश्चित करने के लिए हम सब कुछ करते हैं कि मानवता, मानवता की इस परीक्षा को उतीर्ण करे !

सेन के लिए लोकतंत्र के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता और राजनीतिक स्वतंत्रता के बिना कोई वास्तविक न्याय नहीं है। एक दूसरे के बिना समझ से बाहर है। उनके लिए, लोकतंत्र अमीर देशों के लिए एक लक्जरी आइटम नहीं है, और न ही यह पश्चिम की एक आदर्श (Normative) परियोजना है। यह एक विश्वव्यापी लालसा और एक सार्वभौमिक वादा है। काराकास, मिन्स्क और हांगकांग की सड़कों पर प्रदर्शनकारी भी हमें इसकी याद दिलाते हैं!

लोकतंत्र और सार्वभौमिक मानव अधिकारों की सार्वभौमिकता - ये सेन की फिलोसफी का आधार हैं-। यह एक मौलिक अंतर्दृष्टि का मूल है जो आज फिर से दबाव में है।

सेन ने यूरोपीय बौद्धिक इतिहास के साथ संस्कृत के लेखन में हस्तक्षेप किया, जॉन स्टुअर्ट मिल को जॉन रॉल्स, भगवद गीता के साथ जुरगेन हाबरमास के साथ जोडा है। वह यह दिखाना चाहते है कि दुनिया के कई हिस्सों में न्याय, लोकतंत्र और स्वतंत्रता से संबंधित विचार हैं।

मौलिक मानवाधिकारों का सार्वभौमिक दावा इसलिए पश्चिमी या पूर्वी नहीं है, न यूरोपीय या न एशियाई, न ही कोई जर्मन या भारतीय विचार, बल्कि - अमर्त्य सेन महत्व देते हैं - एक मानव !

सत्तर साल पहले इस आशा को मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के साथ एक नींव देना संभव था: "सभी लोग गरिमा और अधिकारों में स्वतंत्र और समान पैदा होते हैं।" न केवल यूरोपीय और उत्तरी अमेरिकियों का इस वाक्य पर कॉपीराइट है। और यह एक विशेष यहूदी-ईसाई विरासत नहीं है। यह वाक्य भी अफ्रीकियों और एशियाइयों द्वारा बौद्धों, मुसलमानों और हिंदुओं द्वारा सह-लिखा और अपनाया गया था। भले ही यह वादा कभी भी सही नहीं था, सभी के लिए समान रूप से, अपनी सभी खामियों में यह अभी भी एक युगानुकूल उपलब्धि है।

लेकिन जो हासिल हुआ है, उसकी गारंटी नहीं है! दुनिया भर में हम देखते हैं कि सभ्यता के जिस स्तर तक पहुंचा जा रहा है, उसे प्रश्न किया जा रहा है, कि अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत दायित्वों की अवहेलना की जा रही है। हमारे आस-

पड़ोस में भी मौलिक लोकतांत्रिक सिद्धांतों को चुनौती दी जा रही है। स्वतंत्रता के अधिकारों को कम किया जा रहा है, और स्वतंत्र मीडिया और न्याय को सरकारों के नियंत्रण में लाया जाता है।

जहाँ लोकतंत्र का क्षरण होता है,वहीं मानवाधिकारों का भी क्षरण होता है। और जहां मानवाधिकारों का क्षरण हो रहा है, वहीं लोकतंत्र भी मिट रहा है। लोकतंत्र अँधेरे में नहीं मरता है ।यदि ऐसा है, तो यह दिन के उजाले में, हम सभी के सामने मरता है। हम देख रहे हें कि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था कैसे चरमरा रही है,

दुनिया भर में कैसे सत्तावादी प्रवृत्ति और राष्ट्रवाद बढ़ रहा है। क्या अब भी कुझ उम्मीद है?

स्पष्ट रूप से: हाँ, और यह हमारे हाथ में है। महामारी के इन समयों में, यह नहीं दिखाया गया है कि हमारा लोकतंत्र अस्तित्व के खतरों पर प्रतिक्रिया कर सकता है, जल्दी से, कुशलतापूर्वक और शक्तिशाली रूप से। और साथ ही यह स्वतंत्रता को संरक्षित कर सकता है, क्या यह करना जारी रहेगा, सुरक्षा और स्वतंत्रता को संतुलन में रखना, यह एक स्वचालित  (automatism) नहीं है। यह सब हम पर निर्भर करता है।

विश्वास, तर्कसंगतता, विविधता, एकजुटता - ये हमारे लोकतंत्र की ताकत हैं। यदि हम इन शक्तियों पर निर्भर रहना जारी रखते हैं, तो हमारे पास आशा करने का हर कारण है। आज, 75 वर्षों के बाद, द्वितीय विश्व युद्ध के अंत, और जर्मन एकता के तीसवें वर्ष में, हम जर्मन आत्मविश्वास से कह सकते हैं: यह लोकतंत्र नहीं है जो ऐतिहासिक रूप से विफल रहा है। लोकतंत्र के दुश्मन नाकाम रहे हैं। हम साहस और आशा के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

पुस्तक मेले के उद्घाटन पर, डेविड ग्रॉसमैन ने आशा को एक "एंकर" कहा। उन्होंने कहा, "जब लंगर गिराया जाता है, तो यह भविष्य पर निर्भर करता है।" और उसने शब्दों के साथ निष्कर्ष निकाला: “हम पराजित नहीं होंगे। हमें अभी भी उम्मीद है व होगी ! ”

भविष्य में विश्वास करना और आशा रखना - यही शांति पुरस्कार है। और इसके लिए हम अमर्त्य सेन का सम्मान करते हैं

अमर्त्य सेन गद्य लिखते हैं, लेकिन उन्हें कविता बहुत पसंद है। वे अक्सर बंगाली कवि राम मोहन राय को उद्धृत करते हैं:

“कल्पना कीजिए कि आपकी मृत्यु का दिन कितना भयानक होगा। दूसरे लोग बोलते रहेंगे, लेकिन आप जवाब नहीं दे पाएंगे। ”

अमर्त्य - अर्थ अमर । हां: उनके विजन अमर हैं - और उनके विजन जवाब मांगते हैं! हमें इस पर काम करना होगा !

प्रियअमर्त्य सेन, जर्मन पुस्तक ट्रेड मेला 2020 के शांति पुरस्कार पर, आपको बधाई